खण्ड-145, अंक-1
बुधवार, 10 अग्रहायण, शक संवत् 1876
(1 दिसम्बर, 1954 ई0)

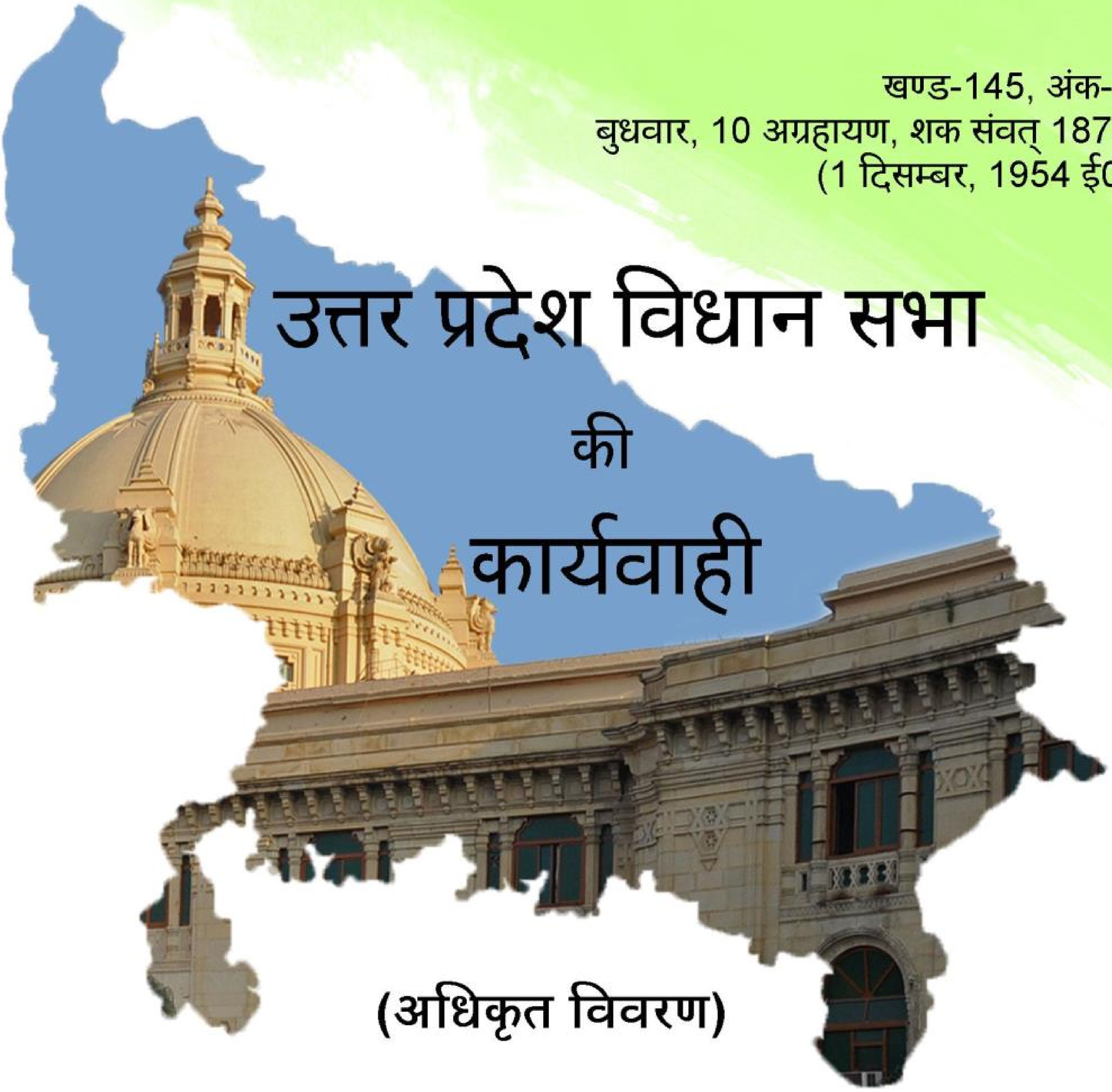

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 145 में 7 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)
१९५४

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 25 पैसे |
वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

उत्तर प्रदेश विधान सभा

बुधवार, १ दिसम्बर, १९५४

विधान सभा की बैठक सभा-मण्डप, लखनऊ में ११ बजे दिन में अध्यक्ष, श्री आत्माराम गोविन्द खेर की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्यों की सूची (३४४)

अंसमानसिंह, श्री
अक्षयवरसिंह, श्री
अजीज इमाम, श्री
अनन्तस्वरूपसिंह, श्री
अब्दुल मुईज खां, श्री
अमरेशचन्द्र पांडेय, श्री
अमृतनाथ मिश्र, श्री
अवधशरण वर्मा, श्री
अवधेशचन्द्रसिंह, श्री
अशरफ अली खां, श्री
आशालता व्यास, श्रीमती
इरतजा हुसैन, श्री
इसरारुल हक़, श्री
उदयभानसिंह, श्री
उमाशंकर, श्री
उमाशंकर तिवारी, श्री
उमाशंकर मिश्र, श्री
उम्मेदसिंह, श्री
उल्फतसिंह चौहान निर्भय, श्री
ऐजाज रसूल, श्री
कन्हैयालाल वाल्मीकि, श्री
कमलासिंह, श्री
कमाल अहमद रिजवी, श्री
करनसिंह यादव, श्री
कल्याणचन्द मोहिले उपनाम छन्नन गुरु, श्री
कल्याणराय, श्री
कामताप्रसाद विद्यार्थी, श्री
कालीचरण टंडन, श्री
काशीप्रसाद पाण्डेय, श्री
किन्दरलाल, श्री
किशनस्वरूप भटनागर, श्री
कुंवरकृष्ण वर्मा, श्री
कृपाशंकर, श्री
कृष्णचन्द्र गुप्त, श्री
कृष्णशरण आर्य, श्री
केदारनाथ, श्री
केवलसिंह, श्री
केशभान राय, श्री
केशव गुप्त, श्री
केशव पाण्डेय, श्री
कैलाशप्रकाश, श्री
खयालीराम, श्री
खुशीराम, श्री
खूबसिंह, श्री
गंगाधर जाटव, श्री
गंगाधर मैठाणी, श्री
गंगाधर शर्मा, श्री
गंगाप्रसाद, श्री
गंगाप्रसादसिंह, श्री
गजेन्द्रसिंह, श्री
गज्जूराम, श्री
गणेशचन्द्र काछी, श्री
गणेशप्रसाद जायसवाल, श्री
गणेशप्रसाद पांडेय, श्री
गिरजारमण शुक्ल, श्री
गिरधारीलाल, श्री
गुप्तारसिंह, श्री
गुरुप्रसाद पांडेय, श्री
गुरुप्रसादसिंह, श्री
गुलजार, श्री
गोविन्दवल्लभ पन्त, श्री
गौरीराम, श्री
घनश्यामदास, श्री
घासीराम जाटव, श्री

चन्द्रभानुगुप्त, श्री
चन्द्रसिंह रावत, श्री
चन्द्रहास, श्री
चरणसिंह, श्री
चिरंजीलाल पालीवाल, श्री
चुन्नीलाल सगर, श्री
छेदालाल, श्री
छेदालाल चौधरी, श्री
जगतनारायण, श्री
जगनप्रसाद रावत, श्री
जगन्नाथबख्शदास, श्री
जगन्नाथ मल्ल, श्री
जगपतिसिंह, श्री
जगमोहनसिंह नेगी, श्री
जटाशंकर शुक्ल, श्री
जयपालसिंह, श्री
जयराम वर्मा, श्री
जयेन्द्रसिंह विष्ट, श्री
जवाहरलाल, श्री
जवाहरलाल रोहतगी, डाक्टर
जुगलकिशोर, श्री
जोरावर वर्मा, श्री
ज्वालाप्रसाद सिन्हा, श्री
झारखंडे राय, श्री
टीकाराम, श्री
डल्लाराम, श्री
तुलाराम, श्री
तुलाराम रावत, श्री
तेजप्रतापसिंह, श्री
तेजबहादुर, श्री
तेजासिंह, श्री
त्रिलोकीनाथ कौल, श्री
दयालदास भगत, श्री
दर्शनराम, श्री
दलबहादुरसिंह, श्री
दाऊदयाल खन्ना, श्री
दाताराम, श्री
दीनदयालु शर्मा, श्री
दीनदयालु शास्त्री, श्री
दीपनारायण वर्मा, श्री
देवकीनन्दन विभव, श्री
देवदत्त मिश्र, श्री
देवदत्त शर्मा, श्री
देवमूर्ति राम, श्री
देवराम, श्री
देवेन्द्रप्रताप नारायण सिंह, श्री
द्वारिकाप्रसाद मित्तल, श्री
द्वारका प्रसाद मौर्य, श्री
द्वारिकाप्रसाद पांडेय, श्री
धनुषधारी पांडेय, श्री
धर्मसिंह, श्री
नत्थूसिंह, श्री
नन्दकुमार देव वाशिष्ठ, श्री
नरदेव शास्त्री, श्री
नरोत्तमसिंह, श्री
नवलकिशोर, श्री
नागेश्वर द्विवेदी, श्री
नाजिम अली, श्री
नारायणदत्त तिवारी, श्री
नारायणदास, श्री
नारायणदीन वाल्मीकि, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
नेत्रपालसिंह, श्री
नौरंगलाल, श्री
पद्मनाथसिंह, श्री
परमानन्द सिन्हा, श्री
परमेश्वरीदयाल, श्री
परिपूर्णानन्द वर्मा, श्री
पहलवानसिंह चौधरी, श्री
पातीराम, श्री
पुत्तूलाल, श्री
पुद्दनराम, श्री
पुलिनविहारी बनर्जी, श्री
प्रकाशवती सूद, श्रीमती
प्रतिपालसिंह, श्री
प्रभुदयाल, श्री
प्रेमकिशन खन्ना, श्री
फ़ज़लुल हक़, श्री
फतेहसिंह राणा, श्री
बद्रीनारायण मिश्र, श्री
बनारसीदास, श्री
बलदेवसिंह आर्य, श्री
बलभद्रप्रसाद शुक्ल, श्री
बशीर अहमद हकीम, श्री
बसन्तलाल, श्री
बसन्तलाल शर्मा, श्री
बाबूनन्दन, श्री
बाबूराम गुप्त, श्री
बाबूलाल कुसुमेश, श्री
बाबूलाल मीतल, श्री

बालेन्दुशाह, महाराजकुमार
बेचनराम, श्री
बेचनराम गुप्त, श्री
बेनीसिंह, श्री
बैजनाथप्रसाद सिंह, श्री
ब्रह्मदत्त दीक्षित, श्री
भगवतीप्रसाद दुबे, श्री
भगवतीप्रसाद शुक्ल , श्री (प्रतापगढ़)
भगवतीप्रसाद शुक्ल, श्री (बाराबंकी)
भगवानदीन वाल्मीकि, श्री
भगवानसहाय, श्री
भीमसेन, श्री
भुवरजी, श्री
भूपालसिंह खाती, श्री
भृगुनाथ चतुर्वेदी, श्री
भोलासिंह यादव, श्री
मक़सूद आलम खां, श्री
मंगलाप्रसाद, श्री
मथुराप्रसाद त्रिपाठी, श्री
मथुराप्रसाद पांडेय, श्री
मदनगोपाल वैद्य, श्री
मदनमोहन उपाध्याय, श्री
मन्नीलाल गुरुदेव, श्री
मलखानसिंह, श्री
महमूद अली खां, श्री
(सहारनपुर)
महाराजसिंह, श्री
महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री
महीलाल, श्री
मिजाजीलाल, श्री
मिहरबानसिंह, श्री
मुज़फ़्फ़र हसन, श्री
मुन्नूलाल, श्री
मुरलीधर कुरील, श्री
मुश्ताक़ अली खां, श्री
मुहम्मद अदील अब्बासी, श्री
मुहम्मद अब्दुल लतीफ़, श्री
मुहम्मद इब्राहीम, श्री हाफ़िज़
मुहम्मद तक़ी हादी, श्री
मुहम्मद नबी, श्री
मुहम्मद नसीर, श्री
मुहम्मद फ़ारुक़ चिश्ती, श्री
मुहम्मद शाहिद फ़ाख़री, श्री
मुहम्मद सुलेमान अधमी, श्री
मोहनलाल, श्री
मोहनलाल गौतम, श्री
मोहनसिंह, श्री
मोहनसिंह शाक्य, श्री
यमुनासिंह, श्री
रघुनाथप्रसाद, श्री
रघुराजसिंह, श्री
रतनलाल जैन, श्री
रमेशचन्द्र शर्मा, श्री
रमेश वर्मा, श्री
राजकिशोर राव, श्री
राजकुमार शर्मा, श्री
राजनारायण, श्री
राजनारायण सिंह, श्री
राजवंशी, श्री
राजाराम, श्री
राजाराम किसान, श्री
राजाराम मिश्र, श्री
राजाराम शर्मा, श्री
राजेन्द्रदत्त, श्री
राजेश्वरसिंह, श्री
राधाकृष्ण अग्रवाल, श्री
रामअधार तिवारी, श्री
रामअधीनसिंह यादव, श्री
रामअनन्त पांडेय, श्री
रामअवध सिंह, श्री
रामकिंकर, श्री
रामकुमार शास्त्री, श्री
रामकृष्ण जैसवार, श्री
रामगुलामसिंह, श्री
रामचन्द्र विकल, श्री
रामचरणलाल गंगवार, श्री
रामजीलाल सहायक, श्री
रामजी सहाय, श्री
रामदास आर्य, श्री
रामदास रविदास, श्री
रामदुलारे मिश्र, श्री
रामप्रसाद, श्री
रामप्रसाद नौटियाल, श्री
रामबली मिश्र, श्री
राममूर्ति, श्री
रामरतनप्रसाद, श्री
रामराज शुक्ल, श्री
रामलखन मिश्र, श्री
रामवचन यादव, श्री
रामशंकर द्विवेदी, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

रामशंकर रविवासी, श्री
रामसनेही भारतीय, श्री
रामसुन्दर पांडेय, श्री
रामसुन्दर राम, श्री
रामसुभग वर्मा, श्री
रामसुमेर, श्री
रामस्वरूप, श्री
रामस्वरूप गुप्त, श्री
रामस्वरूप भारतीय, श्री
रामस्वरूप मिश्र विशारद, श्री
रामहरख यादव, श्री
रामहेतसिंह, श्री
रामेश्वरप्रसाद, श्री
रामेश्वरलाल, श्री
लक्ष्मणराव कदम, श्री
लक्ष्मीदेवी, श्रीमती
लक्ष्मीशंकर यादव, श्री
लताफ़त हुसैन, श्री
लालबहादुर सिंह, श्री
लालबहादुरसिंह कश्यप, श्री
लीलाधर अष्ठाना, श्री
लुत्फ अली खां, श्री
लेखराजसिंह, श्री
वंशनारायणसिंह, श्री
वंशीदास धनगर, श्री
वंशीधर मिश्र, श्री
वशिष्ठनारायण शर्मा, श्री
वसी नक़वी, श्री
वासुदेवप्रसाद मिश्र, श्री
विचित्रनारायण शर्मा, श्री
विद्यावती राठौर, श्रीमती
विष्णुदयाल शर्मा, श्री
विष्णुशरण दुब्लिश , श्री
वीरसेन, श्री
वीरेन्द्रनाथ मिश्र, श्री
वीरेन्द्रपति यादव, श्री
वीरेन्द्र वर्मा, श्री
वीरेन्द्रशाह , राजा
व्रजभूषण मिश्र, श्री
व्रजरानी मिश्र, श्रीमती
व्रजवासीलाल, श्री
व्रजविहारी मिश्र, श्री
व्रजविहारी मेहरोत्रा, श्री
शंकरलाल, श्री
शांतिप्रपन्न शर्मा, श्री
शिवकुमार मिश्र, श्री
शिवकुमार शर्मा, श्री
शिवनाथ काटजू, श्री
शिवनारायण, श्री
शिवपूजन राय, श्री
शिवप्रसाद, श्री
शिवमंगलसिंह, श्री
शिवमंगलसिंह कपूर, श्री
शिवराजबलीसिंह, श्री
शिवराज सिंह यादव, श्री
शिवराम पांडेय, श्री
शिवराम राय, श्री
शिववक्षसिंह राठौर, श्री
शिववचन राव, श्री
शिवस्वरूपसिंह, श्री
शुकदेवप्रसाद, श्री
शुगनचन्द, श्री
श्याममनोहर मिश्र, श्री
श्यामलाल, श्री
श्यामाचरण वाजपेयी शास्त्री, श्री
श्रीचन्द्र, श्री
श्रीनाथराम, श्री
श्रीनिवास पंडित, श्री
श्रीपति सहाय, श्री
सईद जहां मखफी शेरवानी, श्रीमती
संग्रामसिंह, श्री
सच्चिदानन्दनाथ त्रिपाठी, श्री
सत्यनारायण दत्त, श्री
सत्यसिंह राणा, श्री
सम्पूर्णानन्द, डाक्टर
सावित्रीदेवी, श्रीमती
सियाराम गंगवार, श्री
सियाराम चौधरी, श्री
सीताराम, डाक्टर
सीताराम शुक्ल, श्री
सुखीराम भारतीय, श्री
सुन्दरलाल, श्री
सुरुजूराम, श्री
सुरेन्द्रदत्त वाजपेयी, श्री
सुरेशप्रकाशसिंह, श्री
सुल्तान आलम खां, श्री
सूर्य्यप्रसाद अवस्थी, श्री
सेवाराम, श्री
हबीबुर्रहमान अंसारी, श्री
हबीबुर्रहमान आज़मी, श्री

हबीबुर्रहमान खां हकीम, श्री
हमीद खां, श्री
हरगोविन्द पन्त, श्री
हरगोविन्दसिंह, श्री
हरदयालसिंह पिपल, श्री
हरदेवसिंह, श्री
हरिश्चन्द्र वाजपेयी, श्री
हरिसिंह, श्री
हुकुमसिंह, श्री
हरिप्रसाद, श्री
हरिश्चन्द्र अष्ठाना, श्री

श्री रफी अहमद किदवई के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री गोविन्दवल्लभ पंत)—माननीय अध्यक्ष महोदय, करीब पांच हफ्ते हुये हमारे राष्ट्र के एक मुख्य नेता हमको छोड़ कर चले गये। रफ़ी अहमद किदवई साहब जिस दिन देहली में उनका देहान्त हुआ उससे पहले ३/४ दिन तक यहीं लखनऊ में थे और जब कि उनकी तन्दुरुस्ती बहुत अच्छी नहीं थी मगर यह किसी को भी ख्याल नहीं होता था कि ऐसी विपत्ति आ पड़ेगी। यहां से जाने के दूसरे ही दिन सायंकाल को यह समाचार मिला कि एकाएक जब कि वह एक मीटिंग में थे, वहां से वह विह्वल होकर लौट आये और घर पहुंचते ही उनका प्राणवायु उनको छोड़ गया। इस बात से सारे देश भर में एक ऐसा शोक और लोगों में ऐसी व्यथा दिखाई दी जो आज तक भी उस दिन से चली आती है। किसी एक सम्प्रदाय में नहीं, किसी एक वर्ग में नहीं बल्कि सारे लोगों में चाहे सामाजिक विचार कुछ रखते हों, राजनीतिक विचार कुछ रखते हों और भी चाहे उनकी विशेष भावनाएं पृथक् हों मगर सब ने एक स्वर से उनके जो गुण हैं उनकी गाथा इस बीच में गाई और सब ने कहा कि देश को यह एक क्षति पहुंची जिसको पूरा नहीं किया जा सकता। इससे जो उनके मन में आघात हुआ था उसको प्रकट किया।

रफ़ी साहब से हम में से कइयों का जो इस तरफ बैठे हुये हैं उनका थोडे दिनों का नहीं बल्कि दसियों वर्ष का संबंध चला आता था और वह सम्बन्ध कोई एक राजनैतिक नहीं था बल्कि उससे बहुत ज्यादा गहरा था। जहां तक मेरा ताल्लुक़ है, आखिरी ३०-३५ साल से बराबर जब तक कि वह सेंटर में नहीं गये थे, निरन्तर हम लोगों का साथ रहा था। चाहे राजनीतिक कार्य हो, चाहे सामाजिक कार्य हो और चाहे घूमने-फिरने की खाली बात हो उसमें भी उनका और मेरा ऐसा साथ रहता था कि उसका ज़िक्र करना भी मुश्किल लगता है। ऐसा केवल एक सार्वजनिक दृष्टि से नहीं बल्कि व्यक्तिगत दृष्टि से भी हममें से बहुतों के लिये तो यह एक ऐसे दुख की घटना थी कि जिसे बहुत दिनों तक हम लोग भूल नहीं सकते। रफ़ी साहब ने हमारे देश की सेवा निरन्तर की जब से कालेज छोड़ा और शायद कालेज में भी की। स्वतंत्रता संग्राम जब से शुरू हुआ तब से उन्होंने अपने को इसमें झोंक दिया। वह रात दिन उसी के पीछे रहे जब तक हमारी वह जंग चलती रही। मैं पहाड़ में रहता था, कभी पहाड़ से नीचे उतर आता था। चुपके से वह बार-बार आते जब कि लड़ाई एक तरह से दूसरी शक्ल में चल रही थी, वे बातें करते, सलाह मशविरा करते, एक दिन, दो दिन, चार दिन रहते, फिर चले जाते, फिर मौक़ा होता तो आते। इस तरीके पर हम लोग बहुत दिनों तक साथ रहे और उसके बाद जब हमारी यहां पहली मिनिस्ट्री बनी तब भी हम एक साथ यहां गवर्नमेंट में भी काम करते रहे और जितने दिनों तक वे और मैं और मेरे और जो साथी यहां बैठे हैं साथ रहे हमारे बीच में यही नहीं कि एक राजनीतिक सम्बन्ध हो बल्कि एक परिवार के हम लोग थे और हमारे बीच में कहीं पर भी कोई भेद-भाव की गुंजायश नहीं थी। राजनीतिक बातों में तो हमारा एक मत था ही, कभी भी हमारी कैबिनेट में ऐसी बात नहीं हुई जिसमें कि कोई भी आपस में अन्तर आया हो और जो बाहर की बातें होती थीं उनमें भी हम इसी तरह से एक साथ चलते थे। फिर उस वक्त की गवर्नमेंट खत्म हुई, हम लोगों ने त्याग-पत्र दिये और उसके बाद फिर दोबारा, तिबारा या चौबारा, जो कहिये स्वतंत्रता की लड़ाई जब शुरू हुई तो फिर रफी साहब उसमें उसी तरह से काम करते रहे।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री गोविन्द वल्लभ पंत]

उन्होंने जिस तरह से संगठन किया उसकी एक विशेष शक्ति उनमें थी, चाहे देश की लड़ाई के लिये, चाहे चुनावों में, चाहे देश के और कार्यों में, उसको सभी लोग जानते हैं। इसके अतिरिक्त एक अदम्य साहस उनमें था, मैं समझता हूं कि रफ़ी साहब के ऐसा साहस बहुत ही बिरले लोगों में देखने में आ सकता है। किसी काम से वे झिझकते नहीं थे, किसी काम को करने में उनको हमेशा हिम्मत रहती थी और चाहे और डगमगा जायं मगर वे कभी हिलते नहीं थे। यही उनका एक ऐसा विशेष गुण था कि जो भी उनके साथ होते थे उनकी भी हिम्मत, उनका भी साहस, उनकी भी कार्य क्षमता बनी रहती थी। यही नहीं, राजनीतिक कार्य तो वह करते ही थे मगर उसके अतिरिक्त जितने और काम भी उनके रास्ते में आ जाते थे या कोई भी उनसे जो काम करने को कहता था तो उसे भी वे यथासम्भव शक्ति से करते थे। उन्होंने अपनी योग्यता और कौशल गवर्नमेंट बनने से पहले दिखलायी, फिर एक आन्दोलन करने में वे प्रमुख थे और फिर शासन के कार्य में भी उन्होंने एक अद्वितीय योग्यता दिखलाई और विशेष कर जो हमारी खाद्य समस्या थी उसे हल करने में वे सफल हुये। जहां कि और लोगों को बड़ी-बड़ी कठिनाइयां आईं उन्होंने उनको अपनी ही योग्यता से और अपने ही भरोसे पर निर्णय ले कर पूरा किया। राजनीतिक विषयों में वे एक बड़े मनुष्य की मानवता के गुणों को रखते थे। इसके अलावा कोई भी आदमी उनके पास चला जाय, चाहे वह मित्र हो या उससे उनके कोई भेद-भाव हों, जो भी जाय उसकी मदद करना यह उनके स्वभाव में था। उसके लिये कोई विशेष सम्बन्ध उनका किसी से हो यह आवश्यक नहीं था। कोई भी चला जाय उसकी जो कुछ भी मदद वह कर सकते थे करते थे और उसी के साथ-साथ अगर खुद मदद न कर सकें किसी से करवा सकें तो उसमें भी किसी तरह की कोताही नहीं करते थे और हर तरह से सहायता पहुंचाते थे। उनके निधन से जो देश की हानि हुई और जो उनका प्रभाव था वह तो इससे विदित होगा कि इधर ४, ५ सप्ताह में लोगों ने जो अपने विचार इस सम्बन्ध में प्रकट किये हैं। उनमें साम्प्रदायिकता तो थी ही नहीं और उनके मित्रों की संख्या किसी विशेष सम्प्रदाय में नहीं थी और शायद हिन्दुओं में बहुत ज्यादा तादाद ऐसी थी जो कि रफ़ी साहब के साथ भाई चारे का संबंध रखते थे। मुसलमानों में भी उनका संबंध था परन्तु किसी को कोई फर्क उनके अन्दर नहीं लगता था और न कोई फर्क किसी ने माना। जो लोग इस तरीक़े पर असाम्प्रदायिकता की भावना से काम करते हैं उनके प्रति सभी की श्रद्धा होती है, यह इन ४, ५ सप्ताह में जो हमारे देश में बातें हुई हैं, उससे मालूम होता है। चाहे कोई हिन्दू हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे सिक्ख हो अगर वह देश की सच्चे तरीक़े पर सेवा करने में रत रहता है तो उसके लिये सब की भक्ति होती है और सब का प्रेम होता है और उसके जाने से जो क्षति होती है उससे बड़ा आघात पहुंचता है यह सभी को ज्ञात है। आज उनके निधन से हमारा देश बहुत दुखी है। हम उनके प्रति और अधिक यहां पर कहें यह आवश्यक मालूम नहीं होता है। तमाम समाचार-पत्र, तमाम सभायें, और हमारी लोक सभा में और राज्य सभा में जो बातें कही गयी हैं उनसे सभी लोग परिचित हैं। उनके असंख्य मित्रों का भाव जो इस देश में हैं वह भी सभी जगह पर प्रकट होता रहता है। ऐसी अवस्था में हम केवल इतना ही कह सकते हैं कि इस देश की सेवा जो उन्होंने की और उससे जो कुछ इस देश में जागृति हुई वह बनी रहे और भविष्य में देश में और भी उन्नति निरन्तर होती रहे। सभी के साथ उनका प्रेम-भाव मौलिक रूप से इस प्रकार का था कि जिसमें कोई किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था और जिसमें किसी प्रकार से मन में कटुता नहीं थी और उसके अन्दर जिनके प्रति जो कुछ भी कर सकें उसके करने की तत्परता रहती थी और जो हर तरह से सेवा करने के लिये हमेशा तत्पर रहते थे वह भावना बनी रहे। जो वह देश को एक उच्च अवस्था में देखना चाहते थे बिना किसी वर्ग या वर्ण या सम्प्रदाय के भेद के या जो हमारे राष्ट्र में पूरी एकता की बातें सोचते थे तो वह इसी तरह से उनकी स्मृति बनी रहे और जो उनके स्मारक के लिये इस वक्त योजनायें हो रही हैं उनमें सभी लोग यथाशक्ति सहयोग दें ताकि उस रूप में वह उनका स्मारक

बना रहे, यह सम्मान सभी को रखना है। हम उनकी आत्मा के लिये प्रार्थना करते हैं और उनके परिवार के प्रति इस सदन की समवेदना अध्यक्ष महोदय भेज दें उनसे हम यही प्रार्थना करते हैं।

श्री राजनारायण (जिला बनारस)—निश्चय ही श्री रफ़ी अहमद किदवई के अचानक निधन से सारा देश शोक संतप्त हुआ।. इसमें शक नहीं कि रफ़ी साहब उन व्यक्तियों में से थे जो अपने विरोधियों के दिल में आदर का स्थान रखते थे। यदि देखा जाय तो रफ़ी साहब का जीवन कौतूहलपूर्ण जीवन था। जिस समय कि रफ़ी साहब, लखनऊ में, अचानक हृदय की गति बन्द हो जाने से, जब उनका निधन हुआ उसके पहले, आये हुये थे और यहां पर अधिकांश लोग अपनी-अपनी समस्याओं को ले कर उनके सामने गये थे, ऐसा कोई नहीं सोचता था कि रफी साहब जब यहां से जायंगे तो एकाएक उनके हृदय की गति बन्द होगी और वे इस दुनिया से उठ जायंगे।

मुझे उस रात को बहुत ही दुख हुआ जब कि मैं यहां लखनऊ से एकाएक बनारस गया और रात को हमारे पास पत्रकार लोग आये और उन्होंने हमें खबर दी कि रफ़ी साहब के हृदय की गति बन्द हो गयी और वह इस दुनिया से उठ चले। कुछ समय तक तो मैं कुछ कह सकने में असमर्थ रहा और कुछ सोच नहीं पाया कि मैं यह सुन क्या रहा हूं। कई बार मैंने उनसे कहा कि आप लोगों ने क्या इस खबर की पुष्टि की है? दो-तीन पत्रकार थे। उन्होंने कहा कि बिल्कुल निश्चित खबर है। अब इसमें किसी शक की गुंजाइश नहीं है।

जैसा कि माननीय मुख्य मंत्री जी ने कहा कि रफ़ी साहब जिस राजनीतिक दल से सम्बन्धित थे उसके बाहर भी उनके मित्रों की एक बहुत बड़ी मंडली थी यह बात सत्य है। ये सब बातें सर्वविदित हो गई हैं कि रफ़ी साहब अपने मित्रों का एक इतना व्यापक समूह रखते थे जिससे रफ़ी साहब के उठ जाने से चारों तरफ हाहाकार मच गया। मैं इस अवसर पर ज्यादा क्या कहूं। इतना ही कहना चाहता हूं कि आज हमारे मुल्क में रफ़ी साहब ऐसे व्यक्ति की विशेष आवश्यकता थी। जब कि समाज अनेक प्रकार की उलझनों से दुखी हो और उसमें कभी-कभी साम्प्रदायिक वातावरण भी अपने स्थान पर सामाजिक परिस्थितियों को विकृत करने में संलग्न हो, ऐसे अवसर पर रफी साहब का रहना हमारे लिये और ज्यादा उपयोगी था। हम कभी-कभी जब सोचते हैं कि राजनीतिक गुत्थियों को सुलझाने में क्या रफी साहब ऐसा कुशल आदमी अपने मुल्क में बाक़ी है कोई, तो बहुत ही मुश्किल से ढूंढ़ने पर भी कांग्रेस पार्टी में कोई मिल नहीं पाता। ऐसे-ऐसे अवसर आये हैं, मुझे इसके कहने में तनिक भी संकोच नहीं कि मैं रफी साहब की नीति से विरोध रखता रहा हूं, राजनीतिक और सामाजिक संगठन और ढांचे के बनाने में, मगर तिस पर भी मेरे दिल में रफ़ी साहब के लिये बहुत ही श्रद्धा और आदर के भाव रहे हैं। क्यों रहे हैं? उसका कारण यह है कि रफ़ी साहब के पास कोई भी व्यक्ति अपनी मुसीबतों को ले कर गया तो रफी साहब ने एक मिनट के लिये भी इस बात को सोचा नहीं कि यह व्यक्ति जो हमारे पास आया है उसका किसी विशेष राजनीतिक दल से सम्बन्ध है या नहीं। उस समय जो वस्तु-स्थिति थी, उस समय जो परिस्थिति थी रफ़ी साहब अपने को राजनीतिक के संकुचित वातावरण से अलग रखते हुये, उस परिस्थिति को एक स्वतंत्र व्यक्ति की हैसियत से देखते थे और उसका समाधान और निराकरण करने में अपने को तत्पर करते थे। यही एक विशेष गुण था, जो रफ़ी साहब के लिये, सब के दिल में श्रद्धा और आदर का भाव पैदा करता था। मैं बराबर इस बात के लिये चिन्तित रहता हूं और सोचा करता हूं कि क्या जिन भावों को रफी साहब ने कभी-कभी अपने उन मित्रों से भी व्यक्त किया जिनका उन राजनीतिक दलों से सम्बन्ध था जो उनसे अलग थे, क्या उन भावों की पूर्ति होगी? मुझे ऐसा लगता है कि अब उन भावों की पूर्ति करने की क्षमता आज सरकारी पक्ष में किसी में नहीं है। रफ़ी साहब ही ऐसे थे, जो

[श्री राजनारायण]

अपने को विभिन्न परिस्थितियों में इस ढंग से मोड़ते थे और ऐसा क़दम उठा लेते थे, साहस और दृढ़ता के साथ कि दूसरे का उस तरह से उठा सकना बहुत मुश्किल है और इतना मुश्किल है कि वह असंभव सा ही हो जायगा। जब यहां पर रफ़ी साहब आये थे तो मेरे पास बहुत से मित्र आये और कहा कि गन्ना और चीनी इन दोनों के दामों के सम्बन्ध में कोई हल निकालना चाहिये। रफ़ी साहब के पास चलना चाहिये। मैंने अपने बहुत से मित्रों को रफ़ी साहब के पास भेजा भी। एक सिद्धांत की बात थी कि गन्ने और चीनी के दाम में पैरिटी एस्टेब्लिश (न्याययुक्त संतुलन) होना चाहिये। जब रफ़ी साहब इस सिद्धांत को मानते हैं तो उनको आगे आ कर इसको प्रतिष्ठित भी करना चाहिये। मुझे उनके निकट सम्पर्क में रहने वालों ने बतलाया था कि रफ़ी साहब जब यहां से दिल्ली जायेंगे तो कोई न कोई ऐसा साल्युशन (हल) निकालेंगे जिससे किसानों का हित होगा, जो उपभोक्ता हैं, उनका भी हित होगा और किसी के साथ अन्याय नहीं होगा। एकाएक जिस दिन गये दूसरे दिन ही उनके हृदय की गति बन्द हुई जिससे मैं बहुत परेशानी में पड़ता हूं। मैं साफ़ कहना चाहता हूं कि इतने दिन तक अन्न की समस्या को लेकर अपने देश में तरह-तरह की आशायें लोग बांधते थे। कुछ लोग तो समझते थे कि अगर कंट्रोल हट जायगा तो बड़ी मुसीबत आ जायगी। रफ़ी साहब की ही हिम्मत कहिये, साहस कहिये, या दूरदर्शिता कहिये उन्होंने बहुत ही एलानिया, स्पष्ट तरीक़े से कहा कि हमारे सरकारी विभाग के आंकड़े ग़लत हैं और सरकारी विभाग के आंकड़ों पर चल कर हम अन्न की समस्या हल नहीं करेंगे। मैं समझता हूं कि रफी साहब ने जो समय-समय पर साहसी और अनुकरणीय क़दम उठाये हैं उनको किसी दल विशेष की नीति से न बांधते हुये अगर उसी तरीके से कुछ काम करने के लिये लोग आगे बढ़ेंगे तो देश का कल्याण होगा और अच्छा वातावरण उत्पन्न होगा। इन शब्दों के साथ मैं रफ़ी साहब के संतप्त परिवार के प्रति अपनी तथा अपने तमाम साथियों की ओर से हार्दिक समवेदना प्रकट करता हूं और चाहता हूं कि हम लोगों की यह हार्दिक समवेदना उनके परिवार के पास भेज दी जाय।

राजा वीरेन्द्रशाह (जिला जालौन)—श्रीमन्, पहले मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मैं अपनी पार्टी के नेता का शुक्रगुजार हूं कि उन्होंने मुझे रफ़ी साहब के निधन पर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने का मौका दिया। जैसा कि अभी माननीय मुख्य मंत्री जी और विरोधी दल के नेता जी ने क़िदवई साहब के बारे में जो उनके गुण और उनकी विशेषतायें थीं उनकी चर्चा की मैं उनसे सहमत हूं। श्रीमन्, मैं यह बतलाना चाहता हूं कि मैं क़िदवई साहब को नौ साल से जानता था और जब से मैं उनके सम्पर्क में आया, मैं कह सकता हूं कि उन्हें अपनी पार्टी के लोगों से ही श्रद्धा नहीं थी उनकी विशेषता यह थी कि जो उनके विरोधी थे उनका भी वे समान रूप से आदर करते थे और उन विरोधी भाइयों में उनके प्रति कितनी ऊंची श्रद्धा थी और उनका उन पर कितना असर था आज यह बिलकुल स्पष्ट है। प्रान्त और देश भर में जो उनकी पार्टी के लोग भी नहीं थे उन्होंने भी उनके निधन पर अपने शोक प्रकट किये हैं। श्रीमन्, विशेष बात एक और यह थी कि मैं जब से उनके सम्पर्क में आया मैंने कभी भी यह महसूस नहीं किया कि मैं उनका विरोधी हूं। उन्होंने सदैव अपने से अधिक अपने विरोधियों का ख़्याल किया, जो कि हर राजा को या मंत्रिगण को या मंत्रियों को जो राज्य के हैं, करना चाहिये। राज्य की गुत्थियों को सुलझाने में वे इस बात का बराबर ख़्याल करते थे कि जो चीज़ जनता के हित में हो, जो न्याय की चीज़ हो उसमें निष्पक्ष भाव से जनता के प्रति सेवा करने का परिचय देते थे। श्रीमन्, मैं यह कहना चाहता हूं कि किदवई साहब का देश के नेताओं को अनुकरण करना चाहिये और मंत्रिगण को उनका अनुकरण करना चाहिये। यह उनकी विशेषता ही थी कि उनके प्रति विरोधी पार्टीज़ के लोगों को भी बड़ी श्रद्धा थी। किसी आदमी के लिये भी वे इस तरह का ख़्याल नहीं करते थे कि यह आदमी दूसरी पार्टी का है। श्रीमन्, इस तरह से जैसा कि माननीय मुख्य मंत्री जी ने बतलाया कि अन्न की समस्या को

हल कर के उन्होंने एक बड़ा भारी कार्य किया, इस वजह से भी उनके प्रति हर पार्टी की श्रद्धा थी। मैं श्रीमन्, अपने संयुक्त दल की ओर से और अपनी ओर से आप से निवेदन करना चाहता हूं कि उनके परिवार के पास हम लोगों की समवेदना भेज दी जाय। और मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री अध्यक्ष—श्री रफ़ी साहब के असामयिक और दुखद निधन पर जो माननीय नेता सदन तथा अन्य नेताओं ने अपनी भावनायें इस सदन में प्रकट की हैं और शोक प्रकट किया है, उन भावनाओं के साथ मैं हृदय से सम्बद्ध हूं। मेरा रफ़ी साहब से मैं समझता हूं कि १९२१ ई० से सम्बन्ध रहा है जब कि असहयोग का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और मेरे वे समवयस्क रहे हैं, शायद कुछ महीने का अन्तर है। कभी मैं अपने को उम्र में बड़ा कहता था कभी वे कहते थे लेकिन निश्चय नहीं हो पाया था। मेरी बातचीत भी बड़े खुले दिल से हुआ करती थी और सन् ३० से तो मेरा सम्पर्क और भी गहरा और घनिष्ठ रहा है। तो मैं उन लोगों में से हूं, अनेक उनके मित्र रहे हैं लेकिन मैं उन मित्रों में से हूं जिनका घनिष्ठ सम्बन्ध जब तक वे यहां रहे और केन्द्र में नहीं गये तब तक रहा है। और उनके बारे में जो खूबियां उनकी थीं, उनके विषय में जो मुझे ज्ञान है वह मैं समझता हूं, काफी लोगों के ज्ञान से अधिक ही निकलेगा।

मैं जानता हूं कि वे जब हमारे देश में स्वराज्य के युद्ध का कार्य करते थे तो कितनी कुशलता के साथ करते थे, कितनी बहादुरी के साथ, निर्भीकता के साथ और साहस के साथ करते थे, ये सब बातें मेरी नजरों से गुजरी हैं और उस युद्ध में उनकी सलाह लेने का प्रसंग बार-बार हम लोगों को, हर जिले के लोगों को भी आता था। दौड़-दौड़ कर मुझे बुन्देलखण्ड से आ कर वहां की समस्या हल करने के लिये उनकी सहायता लेनी पड़ती थी। तो ऐसे वे शूर थे, साहसी थे। और यदि विरोधी लोग चाणक्य नीति से चलते थे तो उनकी चालों को समझ कर उसका जवाब भी उन्हीं की नीति के अनुसार देने में वे प्रवीण थे। ये उनमें खूबियां थीं। जहां तक मित्रों के साथ उनका सम्बन्ध था वह हार्दिक था, उनका बर्ताव सुहृद् और भाई की तरह रहता था। विरोधी पार्टी के लोग जो राजनीति में उनके विरोध में थे उनको भी वे अपना सुहृद् समझते थे और उनकी भी सहायता उसी तरह से करते थे जैसे अपने मित्रों की। यह मानवता का उच्च आदर्श उनके जीवन में सब को दृष्टिगोचर रहता था और सब ने उसकी सराहना की है। यही कारण है कि जो उनके सहयोगी या दल के नहीं समझे जाते थे, उन्होंने भी उनकी मुक्तकंठ से सराहना की है। सभी मत के लोगों ने उनकी सराहना की है। जब कि कठिनाइयों के प्रसंग में लोग बहुत गम्भीर हो जाते हैं लेकिन उनकी यह खूबी थी कि ऐसे अवसरों पर भी वे हंसते हुये पाये जाते थे। यह उनके साहस और ढाढस का प्रमाण है और इसी अति साहस के कारण आज हमें इस शोक का सामना करना पड़ रहा है। जिस वक्त उनकी हालत खराब थी उस वक्त भी वे अपना कर्त्तव्य पालन कर रहे थे और अपना वायदा पूरा करने के लिये सभा में उपस्थित हुए थे और इस प्रकार हमको शोक में छोड़ गये। उनके सभी कार्य उनके बड़प्पन, साहस, सुभट सेनानी और चतुर राजनीतिक होने के प्रमाण हैं। शासक भी वे अनोखे थे। हम लोगों को लाल फीते की कठोरता और सख्ती को काटना कठिन होता है। लेकिन मेरा यह स्पष्ट मत है कि उन्होंने उसी लाल फीते की कठोरता को काट कर और अपने स्वतंत्र विचारों द्वारा ही अन्न की समस्या को हल किया था तथा भविष्य के लिये भी हमें यह आशा थी कि वे हमारी कितनी ही अन्य जटिल समस्याओं को हल करने में सहायक होंगे और हमारे प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू के लिये एक योग्य सहायक सिद्ध होंगे, लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि उनका यह अधिक साहस, अपने स्वास्थ्य की चिंता न करते हुये अपने कर्त्तव्य पर दृढ़ रहना, अस्वस्थ होते हुये भी मीटिंग में चला जाना और वहां भाषण देना, आदि कारणों से हमें यह सौभाग्य प्राप्त न हो सका कि उनके द्वारा और अपनी समस्याओं का हल करा सकें। ऐसे लोकप्रिय नेता के निधन पर अगर सदन में सर्वसम्मति से शोक

[श्री अध्यक्ष]

प्रकट किया गया तो उचित ही है और मैं इस शोक में सम्मिलित होता हूं तथा जो विचार यहां प्रकट किये गये हैं उनको मैं उनके कुटुम्बियों के पास भेज दूंगा ।

मैं आशा करता हूं कि इस सदन के सदस्य अपने स्थान पर खड़े हो कर उनकी आत्मा की शांति के लिये प्रार्थना करेंगे ।

(सदन के सब सदस्य दो मिनट के लिये अपने-अपने स्थान पर खड़े हो गये ।)

श्री अध्यक्ष—क्या सदन की यह इच्छा है कि अब सदन का कार्यक्रम स्थगित कर दिया जाय ?

(सदन की अनुमति देख कर)

अब हम उठते हैं और कल ११ बजे फिर बैठेंगे ।

(इसके बाद सदन ११ बज कर ३५ मिनट पर अगले दिन ११ बजे तक के लिये स्थगित हो गया ।)

मिट्ठन लाल,
सचिव, विधान मंडल,
उत्तर प्रदेश ।

लखनऊ;
१ दिसम्बर, १९५४ ।

पी० एस० यू० पी० ए० पी०—२२२—एल० ए०—१९५४—८५०

उत्तर प्रदेश विधान सभा